Web: parmeshwarkaniyam.org

ईश्वर की व्यवस्था: भाग 2: झूठी उद्धार योजना

शैतान की रणनीति: जातियों को गुमराह करना

कट्टरपंथी रणनीति की आवश्यकता

मसीह के अनुयायी जातियों को ईश्वर की व्यवस्था से विमुख करने के लिए शैतान को एक कट्टरपंथी कदम उठाना आवश्यक था।

यीशु के स्वर्गारोहण के कुछ दशकों तक, चर्च यहूदिया के यहूदियों (हिब्रू), प्रवासी यहूदियों (हेलेनिस्टिक), और जातियों (गैर-यहूदी) से मिलकर बने थे। यीशु के कई मूल शिष्य अभी भी जीवित थे और इन समूहों के साथ घरों में सभा करते थे। यह उपस्थिति यीशु के जीवनकाल में सिखाई गई और उदाहरण प्रस्तुत की गई हर बात के प्रति निष्ठा बनाए रखने में मदद करती थी।

यीशु का सिखाया हुआ संदेश

"यीशु ने स्पष्ट रूप से अपने अनुयायियों को यह सिखाया: 'वास्तव में धन्य वे हैं जो ईश्वर के वचन [λογον του Θεου (logon tou Theou), [**तनाख, पुराना नियम**] को सुनते और उसका पालन करते हैं!' (लूका 11:28)।"

उन्होंने कभी भी अपने पिता की शिक्षाओं से विचलन नहीं किया। भजन संहिता 119:4 में यह बात स्पष्ट रूप से प्रकट होती है:
“तूने अपनी आज्ञाएँ इस उद्देश्य से दीं कि हम उन्हें पूरी तरह से मानें।”

आज चर्चों में यह आम धारणा है कि मसीहा का आगमन जातियों को पुराने नियम में ईश्वर की व्यवस्था का पालन करने से मुक्त करता है।

हालांकि, यह धारणा यीशु के चारों सुसमाचारों में कहीं भी समर्थन नहीं पाती है। यीशु का जीवन और शिक्षाएँ उनके पिता की व्यवस्था के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता और निष्ठा का उदाहरण थीं।

मसीह की सच्ची शिक्षा

प्रारंभिक चर्च में, ईश्वर की व्यवस्था का पालन मसीह के अनुयायियों के लिए एक आधारशिला थी। मसीह ने स्पष्ट रूप से कहा कि आशीर्वाद उन पर आता है जो ईश्वर के वचन को सुनते हैं और उसका पालन करते हैं।

इसलिए, यह विचार कि व्यवस्था का पालन अब आवश्यक नहीं है, न केवल सुसमाचारों के सत्य के विरुद्ध है, बल्कि मसीह की सच्ची शिक्षा को भी विकृत करता है।

मूल उद्धार योजना: शाश्वत सत्य

ऐसा कभी कोई समय नहीं था जब ईश्वर ने किसी मनुष्य को अपने पास लौटने, पश्चाताप करने, अपने पापों की क्षमा पाने, आशीर्वादित होने और उद्धार प्राप्त करने का अवसर न दिया हो।

मसीहा के भेजे जाने से पहले भी, जातियों के लिए उद्धार का मार्ग हमेशा उपलब्ध था।

आज कई चर्चों में यह धारणा है कि केवल यीशु के आगमन और उनके प्रायश्चित बलिदान के साथ ही जातियों को उद्धार तक पहुँचने का अवसर मिला।

हालांकि, सच्चाई यह है कि वही उद्धार योजना, जो पुराने नियम में हमेशा से अस्तित्व में थी, यीशु के समय में भी जारी रही और आज भी लागू है।

पुराने समय में, पापों की क्षमा की प्रक्रिया में प्रतीकात्मक बलिदान का महत्व था। लेकिन हमारे समय में, हमें ईश्वर के मेमने का सच्चा बलिदान प्राप्त है, जो संसार के पापों को हर लेता है (यूहन्ना 1:29)।

इस महत्वपूर्ण अंतर के अलावा, बाकी सब कुछ वैसा ही है जैसा मसीह से पहले था।

उद्धार की प्रक्रिया: इस्राएल के साथ जुड़ाव

उद्धार प्राप्त करने के लिए, जाति के व्यक्ति को उस राष्ट्र के साथ जुड़ना होगा जिसे ईश्वर ने अपना घोषित किया है। यह वही शाश्वत वाचा है जो खतना के चिह्न से सील की गई थी:
“जो जाति का व्यक्ति यहोवा से जुड़े, उसकी सेवा करने के लिए, इस प्रकार उसका दास बनने के लिए... और जो मेरे वाचा में स्थिर बना रहेगा, मैं उन्हें अपने पवित्र पर्वत पर ले जाऊँगा” (यशायाह 56:6-7)।

यीशु का मिशन: नई धर्म स्थापना नहीं

यह समझना महत्वपूर्ण है कि यीशु ने जातियों के लिए कोई नई धर्म की स्थापना नहीं की।

- यीशु ने जातियों के साथ केवल कुछ अवसरों पर बातचीत की, क्योंकि उनका मुख्य ध्यान उनके अपने राष्ट्र, इस्राएल, पर था।

- उन्होंने बारह शिष्यों को स्पष्ट निर्देश दिए:
  "जातियों के पास मत जाओ, न ही सामरियों के नगरों में प्रवेश करो; बल्कि इस्राएल की खोई हुई भेड़ों के पास जाओ" (मत्ती 10:5-6)।

सच्ची उद्धार योजना: सरल और सीधी

सच्ची उद्धार योजना, जो पुराने नियम के नबियों और यीशु के सुसमाचारों में प्रकट की गई है, सरल और सीधी है:

1. **पिता की व्यवस्थाओं के प्रति निष्ठावान बनो।**
2. **पिता तुम्हें इस्राएल से जोड़ेगा।**
3. **पिता तुम्हें पापों की क्षमा के लिए पुत्र के पास भेजेगा।**

पिता उन लोगों को नहीं भेजते जो उनकी व्यवस्थाओं को जानते हैं लेकिन खुलेआम अवज्ञा में जीते हैं।

ईश्वर की व्यवस्था को अस्वीकार करना विद्रोह करना है, और विद्रोहियों के लिए उद्धार नहीं है।

झूठी उद्धार योजना: एक विकृत शिक्षण

चर्चों में प्रचारित उद्धार की योजना अधिकांशतः झूठी है। इसका सबसे स्पष्ट प्रमाण यह है कि यह योजना उस सत्य से मेल नहीं खाती जो ईश्वर ने पुराने नियम के नबियों के माध्यम से प्रकट की और जो यीशु ने चार सुसमाचारों में सिखाई।

कोई भी सिद्धांत जो आत्माओं के उद्धार से संबंधित हो, इन दो मूल स्रोतों द्वारा पुष्टि किया जाना चाहिए:

1. **पुराना नियम (तनाख)**—जिसमें ईश्वर की व्यवस्था और नबियों की शिक्षाएँ शामिल हैं।
2. **यीशु के वचन**—जिन्हें स्वयं ईश्वर के पुत्र ने सिखाया।

अवज्ञा का संदेश: अदन से आरंभ

झूठी उद्धार योजना का मुख्य विचार यह है कि जाति के लोग ईश्वर की आज्ञाओं का पालन किए बिना ही उद्धार प्राप्त कर सकते हैं।

यह अवज्ञा का संदेश अदन के बगीचे में साँप द्वारा प्रचारित संदेश के समान है:
"निश्चित रूप से तुम नहीं मरोगे" (उत्पत्ति 3:4-5)।

यदि यह संदेश सत्य होता, तो:

- **पुराना नियम** स्पष्ट रूप से यह सिखाता कि आज्ञाओं का पालन करना आवश्यक नहीं है।
- **यीशु** अपने मिशन के एक भाग के रूप में यह घोषणा करते कि वे लोगों को ईश्वर की व्यवस्था से मुक्त करने आए हैं।

लेकिन सच्चाई यह है कि न तो पुराना नियम और न ही सुसमाचार इस विचार का कोई समर्थन प्रदान करते हैं।

जो लोग ईश्वर की व्यवस्था के पालन के बिना उद्धार का प्रचार करते हैं, वे अक्सर यीशु के वचनों को अनदेखा करते हैं।

मसीह की शिक्षाओं की अनुपस्थिति

- उनका यह दृष्टिकोण इस तथ्य से आता है कि मसीह की शिक्षाओं में कुछ भी ऐसा नहीं मिलता जो यह संकेत दे कि वे उन लोगों को बचाने के लिए आए थे जो जानबूझकर उनके पिता की व्यवस्थाओं की अवज्ञा करते हैं।
- इसके बजाय, वे अपने तर्क के लिए ऐसे मनुष्यों के लेखनों पर निर्भर करते हैं जो मसीह के स्वर्गारोहण के बाद सामने आए।

भविष्यवाणी की अनुपस्थिति: झूठी योजना का आधार

पुराना नियम, जो ईश्वर की भविष्यवाणी की संपूर्णता का आधार है, कहीं भी यह नहीं कहता कि यीशु के बाद कोई और परमेश्वर का संदेशवाहक प्रकट होगा।

- स्वयं यीशु ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि उनके बाद कोई ऐसा व्यक्ति आएगा जिसे जातियों के लिए उद्धार की एक नई योजना सिखाने का कार्य सौंपा जाएगा।
- इसके विपरीत, यीशु ने जो सिखाया, वह उनके पिता की व्यवस्था के प्रति पूर्ण निष्ठा और आज्ञाकारिता को अनिवार्य मानता है।

निष्कर्ष: सत्य और असत्य का भेद

झूठी उद्धार योजना, जो यह सिखाती है कि ईश्वर की आज्ञाओं का पालन अब आवश्यक नहीं है, ईश्वर के वचन और मसीह की शिक्षाओं के विपरीत है।

- यीशु ने स्पष्ट रूप से अपने अनुयायियों को अपने पिता की व्यवस्था का पालन करने के लिए बुलाया।
- कोई भी विचार जो इस से भिन्न हो, न केवल असत्य है, बल्कि आत्माओं को भटकाने का एक साधन भी है।

भविष्यवाणियों का महत्व: ईश्वर की योजना का सत्यापन

ईश्वर की प्रकट की गई बातों के लिए अधिकार और पूर्व निर्धारित नियुक्ति की आवश्यकता होती है, ताकि वे वैध मानी जा सकें।

हम जानते हैं कि यीशु पिता के भेजे हुए हैं क्योंकि उन्होंने पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पूरा किया। लेकिन यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि यीशु के बाद, नए शिक्षाओं के साथ किसी अन्य मनुष्य के भेजे जाने की कोई भविष्यवाणी नहीं है।

हमारी उद्धार से संबंधित सारी जानकारी यीशु में समाप्त होती है। उनके स्वर्गारोहण के बाद जो भी लेखन आए—चाहे वे बाइबल के भीतर हों या बाहर—उन्हें सहायक और गौण माना जाना चाहिए।

किसी भी ऐसे मनुष्य के आने की भविष्यवाणी नहीं की गई जो हमें कुछ ऐसा सिखाने के लिए नियुक्त किया गया हो, जो यीशु ने नहीं सिखाया।

कोई भी सिद्धांत जो यीशु के चार सुसमाचारों के वचनों के साथ मेल नहीं खाता, उसे असत्य के रूप में अस्वीकार किया जाना चाहिए, चाहे उसकी उत्पत्ति, अवधि, या लोकप्रियता कुछ भी हो।

पुराने नियम की उद्धार संबंधी भविष्यवाणियाँ

मलाकी के बाद उद्धार से संबंधित सभी घटनाओं की भविष्यवाणी पुराने नियम में की गई थी। इनमें शामिल हैं:

- **मसीहा का जन्म**: यशायाह 7:14; मत्ती 1:22-23
- **योहन बपतिस्मा देने वाले का एलिय्याह की आत्मा में आगमन**: मलाकी 4:5; मत्ती 11:13-14
- **मसीह का मिशन**: यशायाह 61:1-2; लूका 4:17-21
- **यहूदा द्वारा मसीह का विश्वासघात**: भजन संहिता 41:9; जकर्याह 11:12-13; मत्ती 26:14-16; मत्ती 27:9-10
- **उनका न्याय**: यशायाह 53:7-8; मत्ती 26:59-63
- **उनकी निर्दोष मृत्यु**: यशायाह 53:5-6; यूहन्ना 19:6; लूका 23:47
- **धनी व्यक्ति की कब्र में उनका दफनाया जाना**: यशायाह 53:9; मत्ती 27:57-60

भविष्यवाणियों की अनुपस्थिति: उद्धार के "नए तरीके" का अभाव

कोई भी भविष्यवाणी इस बात का उल्लेख नहीं करती कि यीशु के स्वर्गारोहण के बाद किसी व्यक्ति को यह कार्य और अधिकार दिया जाएगा:

1. जातियों के उद्धार का एक अलग तरीका विकसित करना।
2. ऐसा तरीका सिखाना जो ईश्वर की व्यवस्था की अवज्ञा में जीवन जीने की अनुमति देता हो।
3. यह दावा करना कि अवज्ञा करने वाले को भी स्वर्ग में खुले हाथों से स्वीकार किया जाएगा।

निष्कर्ष: भविष्यवाणी के बिना, अधिकार के बिना

ईश्वर की योजना में किसी भी नई शिक्षा या उद्धार के "नए तरीके" का अधिकार केवल तभी मान्य हो सकता है जब उसे भविष्यवाणी के माध्यम से पहले से घोषित किया गया हो।

यीशु के बाद ऐसी कोई भविष्यवाणी नहीं है। इसलिए, जो भी सिखाया जाए और यीशु के वचनों से मेल न खाए, उसे सत्य के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

यीशु की शिक्षा: वचन और कार्य के माध्यम से

मसीह का एक सच्चा अनुयायी अपने पूरे जीवन को उनके उदाहरण के अनुसार ढालता है। यीशु ने स्पष्ट रूप से सिखाया कि उनसे प्रेम करने का अर्थ है पिता और पुत्र दोनों के प्रति आज्ञाकारी होना। यह आदेश कमजोर हृदय वाले लोगों के लिए नहीं है, बल्कि उनके लिए है जो परमेश्वर के राज्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं और अनंत जीवन प्राप्त करने के लिए जो भी आवश्यक है, उसे करने के लिए तैयार रहते हैं। यह प्रतिबद्धता दोस्तों, चर्च, और परिवार की ओर से विरोध को आकर्षित कर सकती है।

खतना, बाल और दाढ़ी, सब्त, अशुद्ध मांस, और त्सीतीत पहनने की आज्ञाएँ आज अधिकांश ईसाई समुदायों द्वारा अनदेखी की जाती हैं। जो लोग इन आज्ञाओं का पालन करते हैं और परंपरा का हिस्सा बनने से इनकार करते हैं, उन्हें उत्पीड़न का सामना करना पड़ सकता है, जैसा कि यीशु ने मत्ती 5:10 में हमें चेतावनी दी थी।

ईश्वर की आज्ञाओं का पालन साहस की माँग करता है, लेकिन इसका प्रतिफल अनंत जीवन है।